

Package of Practice

Particular	English	Hindi
Crop	Pumpkin	Pumpkin
Season/Region	As per the regional practices and timings.	क्षेत्रीय प्रथाओं और समय के अनुसार।
Land preparation	Land selection - Soils with good nutrition (medium soil, loam to sandy loam). The soil must be having excellent drainage history. If possible use the land with a previous crops other than cucurbitaceae. Land should be well prepared. 1-2 deep ploughing followed by 3-4 rounds of harrows to get fine tilt. Before the final harrow, apply 8 to 10 MT well-decomposed FYM/acre along with 1kg Trichoderma for controlling soil-born fungus.	भूमि का चयन - अच्छी पोषण क्षमता वाली मिट्टी (मध्यम मिट्टी, दोमट से रेतीली दोमट)। मिट्टी का जल निकासी का इतिहास उत्कृष्ट होना चाहिए। यदि संभव हो, तो कद्दूवर्गीय फसलों के अलावा अन्य फसलों वाली भूमि का उपयोग करें। भूमि को अच्छी तरह से तैयार किया जाना चाहिए। 1-2 गहरी जुताई के बाद, अच्छी जुताई के लिए 3-4 बार हरो चलाएँ। अंतिम हरो चलाने से पहले, मिट्टी जनित कवक को नियंत्रित करने के लिए 8 से 10 मीट्रिक टन अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद/एकड़ के साथ 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा डालें।
Seed rate & Method	Seed Rate: 450-500 g per acre. Sowing: Direct in the main field (it can also be transplanted. Seedlings at 4 leaves or 20 days old are planted).	बीज दर: 450-500 ग्राम प्रति एकड़। बुवाई: मुख्य खेत में सीधे (इसे रोपा भी जा सकता है। 4 पत्तियों वाले या 20 दिन पुराने पौधे रोपे जाते हैं)।
Spacing	Spacing - Ground System: Row to Row - 180 cm and Plant to Plant 45 - 60 cm.	अंतर - भूमि प्रणाली: पंक्ति से पंक्ति - 180 सेमी और पौधे से पौधे 45 - 60 सेमी।
Harvest	Harvest the fruit at the time of physiological maturity. Date of maturity or days after sowing (85-90 days) The maturity of Pumpkin can be judged by the following steps: 1. A dead tendril attaches to the vine. 2. Dull appearance of the fruit compared to their slick appearance. 3. Maturity is also judged by metallic sounds. 4. After harvesting fruits should not be left long in the sun otherwise sun scaled may develop.	फलों की कटाई शारीरिक परिपक्वता के समय करें। परिपक्वता तिथि या बुवाई के कुछ दिन बाद (लगभग 85-90 दिन) कद्दू की परिपक्वता का अंदाजा निम्नलिखित चरणों से लगाया जा सकता है: 1. एक मृत प्रतान बेल से जुड़ जाता है। 2. फलों का चिकनापन की तुलना में फीका दिखना। 3. परिपक्वता का अंदाजा धातु जैसी आवाज़ से भी लगाया जा सकता है। 4. कटाई के बाद फलों को धूप में ज्यादा देर तक नहीं रखना चाहिए, अन्यथा सन स्केल्ड विकसित हो सकते हैं।
Expected Average Yield	Average yield: 10-12 MT/acre (depending on season and cultural practice).	औसत उपज: 10-12 मीट्रिक टन/एकड़ (मौसम और कृषि पद्धति पर निर्भर करता है)।
Nutrient Management	Total N:P:K requirement @ 80:100:120 kg per acre. Dose & Timing: Basal Dose: Apply 50% N and 100% P, K as basal dose during final land preparation. Top Dressing: 25% N at 30 days after sowing and 25% N at 50 days after sowing.	कुल नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटेशियम की आवश्यकता 80:100:120 किग्रा प्रति एकड़। मात्रा एवं समय: आधारभूत मात्रा: अंतिम भूमि तैयारी के दौरान 50% नाइट्रोजन और 100% फास्फोरस, पोटेशियम की आधारभूत मात्रा डालें। टाप ड्रेसिंग: बुवाई के 30 दिन बाद 25% नाइट्रोजन और बुवाई के 50 दिन बाद 25% नाइट्रोजन डालें।
Pest & Disease management	Downy mildew Metalaxyl + Mancozeb 72% WP - 2.0g/L Mancozeb 75% WP - 2.0g/L Foseryl AL - 1.0g/L Powdery mildew Triadmeфон 25% WP - 0.3g/L Dinocap 48% EC - 2.0ml/L Insect Pest: Leaf miner Red Pumpkin Beetle Trizophos - 1.0ml/L Carbaryl 50% WP - 4.0g/L Thiomethoxam 25% WP - 0.5ml/L	कोमल फफूंदी मेटालैक्सिल + मैन्कोज़ेब 72% WP - 2.0 ग्राम/लीटर मैन्कोज़ेब 75% WP - 2.0 ग्राम/लीटर फोसेरिल AL - 1.0 ग्राम/लीटर पाउडरी फफूंदी ट्रायडमेफॉन 25% WP - 0.3 ग्राम/लीटर डाइनोकेप 48% EC - 2.0 मिली/लीटर कीटनाशक: लीफ माइनर, लाल कद्दू भृंग ट्राइज़ोफॉस - 1.0 मिली/लीटर कार्बारिल 50% WP - 4.0 ग्राम/लीटर थायोमैथोक्सम 25% WP - 0.5 मिली/लीटर
Weed Control - Chemicals with doses and timing	Timely weed removal is very important, need based hand weeding can be done to ensure healthy crop. To complete this operation before fruit set.	समय पर खरपतवार निकालना बहुत जरूरी है, स्वस्थ फसल सुनिश्चित करने के लिए जरूरत के अनुसार हाथ से निराई की जा सकती है। फल लगने से पहले यह काम पूरा कर लें।
Irrigation Schedule	It needs regular irrigation. The irrigation interval and quantity need to fix to avoid fruit cracking. In light soil and summer season, the irrigation frequency should be more.	इसे नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है। फलों को फटने से बचाने के लिए सिंचाई के अंतराल और मात्रा को निश्चित रखना आवश्यक है। हल्की मिट्टी और गर्मी के मौसम में, सिंचाई की आवृत्ति अधिक होनी चाहिए।